प्राक्कथन

हाइड्रो पावर, ऊर्जा का एक नवीकरण योग्य और पर्यावरण सम्बन्धी अनुकूल स्रोत है । चूंकि हाईड्रो पावर स्टेशनों में तात्कालिक प्रचालनों के लिए अन्तर्निहित सामर्थ्यता होती है, वे अधिकतम मांग को पूरा करने और पावर प्रणाली की विश्वसनीयता को सुधारने के लिए अधिकतर अन्य ऊर्जा स्रोतों की अपेक्षा अधिक प्रतिक्रियाशील हैं। अतः यह महत्वपूर्ण है कि विद्यमान हाईड्रो क्षमता का ईष्टतम रूप से उपयोग किया जाए। देश की हाईड्रो पावर उत्पादन क्षमता में 23.72 प्रतिशत के शेयर सहित चार सीपीएसईज अर्थात; एनएचपीसी लिमिटेड (एनएचपीसी), एसजेवीएन लिमिटेड (एसजेवीएन), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड (टीएचडीसी) और एनएचडीसी लिमिटेड (एनएचडीसी) इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में निष्पादन लेखापरीक्षा अप्रैल 2009 और मार्च 2014 के मध्य इन चार सीपीएसईज द्वारा उत्पादन से लेकर राजस्व के संग्रहण तक की गतिविधियों की प्रभावकारिता का निर्धारण करने के लिए की गई थी। उत्तराखंड में 16-17 जून 2013 को आई आकस्मिक बाढ़ की घटना के परिणामस्वरूप इन सीपीएसईज में आपदा प्रबंधन के विशिष्ट पहलू को भी शामिल किया गया है।

यह लेखापरीक्षा प्रतिवेदन भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा एवं लेखा विनियम 2007 तथा निष्पादन लेखापरीक्षा दिशानिर्देश 2014 के अनुसार तैयार किया गया है।

लेखापरीक्षा, लेखापरीक्षा प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर एनएचपीसी, एसजेवीएन, टीएचडीसी, एनएचडीसी और विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सहयोग हेतु आभार व्यक्त करती है।